M. T. B. COLLEGE, SURAT

Manuscripts Library

No. Rol.

Sur. 645

Tale: Hammhan Stotem

Hamin at Stotra: Title

: Author

: Editor

: Aam. 1730 : Year, Vols.

: Publisher

: Remarks

195

अनम्बीरामन्द्रायः॥। श्वितकोधेयामान्नमरनगरीम उत्वाननानको स्वात्माद्रमान्द्रमान्या स्वाकात्रणात्रमानिवरस्यात्माद्रमान्या प्रतिक्रलिकारोम्बर्गमान्यामधन्तरुक्षेत्रस्थान्या नारसिह्थ्यममञ्चर्पत्पवर्णान्या ।। विद्युत्युक्तात्माल विवज्ञलिभिर्णामणेनायम्पाद्राह्थुलल्ख्य के। विवद्नत्। तिथनिमामोन्नी हिनप्तिरन्दे। विद्रुत्युक्ते

वास्तरपंद्रोलन्द्रिते। हुन्युवादिसमुद्धालकृतनममं हाकिनी संगमे। गिमागरमगम प्राथिती जाताविद्दार स्व ली शिमायामी नतने। हाने। जनवता प्राथितियद्द्धा ति। प्रवासकाट तप्रवासकाट तप्राकृतियद्द्धा हिश्यान परायाणस्यम सत्तेना रायाण र्याप्यकाः। श्री मझमरीयतित तपने ताया विद्दाति वेद्दा वतस्त्री नेजल श्रिमतिले व्यक्ति देवले। के। मास्यम् प्रमुख्य एटल्तरा त्रष्टी मुक्ति व्यक्ति हिल्ली के। मास्यम् प्रमुख्य एटल्तरा त्रष्टी मुक्ति वास्तरम्हल्ला लगात्वेत्य ले

नं प्रनाइ हिन्द्रना विमृतवक्ष प्रकार विभिन्न स्तार्थित ने स्तार्थित ने स्तार्थित ने स्तार्थित स्तार्य स्तार्थित स्तार्थित स्तार्थित स्तार्थित स्तार्थित स्तार्थित स्त

वंलोलिबस्ती शिवशिस्तितज्ञलिति। जनीस्तवशिषा मास्त्रमानिले स्वयुवितग्गनिशी तवा रमुरारिस्स्ट रत्रमं शास्त्रमनव जनवतात्त्त्वयमी नर्णा शिर्मे देनस्रारिक् विश्वित्रस्त्रयामास्त्रार्गिताहेना रेपयो थे करतल कित्रस्य यामास्त्रार्गिताहेना स्वयो के प्रसित्वहन्य प्रित्व विश्वित्रस्त हेत्यस्त्र हेत्र हेत्यस्त्र हित्यस्त्र हेत्यस्त्र हेत्यस्त हेत्यस्त्र हेत्यस्त्र हेत्यस्त हेत्यस्त हेत्यस्त हेत्यस्त्र हेत्यस्त हेत्यस्त

रवं र

न्यांताद्धिमध्यमज्ञल्याः असर्ष्टःसंदाद्धन्द्देश्य स्पत्नत्वसेवितकण्यद्यायस्त्रीवलिश्चन्यतिण्या रुष्टेणकेल्यपर्याध्मागराद्दतिवतत्वज्ञालातानाक गतिव्धानत्याः मड वितिहित्योवाकाडकरादकरा दरे।ख्यातिनगवान् सम्मानिदात्तरात्वसतावन्ति जाम्यन्यद्रकदरोद्दरद्यीव्यावितिविविश्वक्लोले रजमाङ्गद्रकदरोद्दरद्यीव्यावितिविविश्वक्लोले रजमाङ्गद्रकदरोद्दरद्यीव्यावितिविविश्वक्लोले रजमाङ्गद्रकदरोद्दरद्यीव्यावितिविविश्वक्लोले रजमाङ्गद्रकद्यात्वात्त्रमाङ्गद्वात्राक्ष्यस्य

णिक्तिमंतिमाञ्चलवने स्वन् कियत्योध्यवासोताये क्महीत्यापिक्मकीम् श्रिप्यास्तामपही नुसेनोणिनि न्युरेष्ठकिश्चित्रशास्त्रवहिष्टिणित्तेग्णीमाहिसकारणी सुलिखितागितियम्पाप्स्तिथिश्चित्राम्परमहमहरू किर्णावार्यकर् यनित्रा तो क्महास्तिन्यस्म स्वत्राधियम्बद्धाः स्वितार्पात्रवश्यमम्बद्धाः तेत्रग्वत्रस्याः स्वितारपात्रवश्यमम्बद्धाः तेत्रग्वत्रस्याः स्वतिहानमस्त्रम्थे स्मित्नहितं जलित्यनिद्धाणिवित्र स्वतिहानमस्त्रम्थे स्मित्नहितं जलित्यनिद्धाः वित्रम्यिन्याः वित्रम्यिनम्बद्धाः स्वतिहानमस्त्रम्थे स्मित्नमहित्यद्वाद्धाः वित्रमुख्ये

राषाद्धश्रीम्ननपवनिगमकरी स्वाकितोरस्वताहेवसा विज्ञासिनिधुवध्वक्रां स्वाचित्रे स्वाक्षित्रे स्वाच्या श्रिप विज्ञादे हेट्टा स्वेत्यान्य त्र मनिक्षे प्रत्या श्रिप वृत्वति विज्ञाक्ष्या सम्प्रता होते श्रीनिक्ष हामरिविधि मन्द्र स्वाक्ष्या सम्प्रस्ता होते श्रीनिक्ष हामरिविधि विज्ञाक्ष्या सम्प्रस्ता होते हामरिविधि विज्ञान स्वाचित्र सनगवानकोडावतारोहिश्विहात्मवहातकेनक्रिकाटरक्र रीकोण्णतरस्थ्यमी प्रश्रीतात्मवहातकेनक्रिक्वित्व कर्गागना (गाल) नेशों वक्क्यानस्य सनयनवास्रोत्त सिकापिन प्रश्रामश्चारम्भत्तिकात्मिणाह् रिकार्यिन (पात्र प्राप्त समामान्य क्रिक्याणां कार्यात्म प्रमास्य श्वक्रपाणाकोडाका सम्पष्टश्ची मक्षतितिव्य लेक्ब्राम् वापन्य हो स्रष्टियस्प हिंद्यो हलानि विष्य लेक्ब्राम् वणम्बलाका तक्स्य स्वालम्बर्धि स्पाल्यात्म व्यापना स्थानस्य हिंद्या स्वालम्बर्धा स्वाल

निवासम्बर्गम् वरन्कवलयका जासतिकावश्री विज्ञाण सिनवहका टिक्क टिलंद इं किर्न नियम् का का स्थार र समनगवान न्या कित् ति प्रश्री यस्या कि सवत समा कमित निमाल वमान त्रण लाल का लम्हण ग्राम्य कल ना रेके तुन्य श्री कही का समय प्रिक्त सिक्स म नी र हा कर्ता स्वयमी कही का समय प्रश्रा तिवित्त वन महत्र स्था सिक्स है स्थाप के दस्त कित स्थाप नियम निवास के के प्रवित्त मुक्त का कार यन्त्रण के दस्तिक त्रिक्त मिल्ला निवास के के जाम हिन्द है प्राप्त का क्या के दस्त कित स्थापनिक विवास के के सतमासतोश्वता विविधियातने रवीकरतके जिवं इक उनामिलामुङ्ग्रिश्विध्यंगाव्गाद्रार बुरिव्यविश्वा अवना ने प्राप्ता तालपके न जुन न स्वयं वानमानी प्रयोगात्य हे द्वापिष्ठे सुना त्या का विद्या न स्वयं के इनिना हो येनो का वेश्वर स्वयं प्राप्त के विद्या के विश्वर है स्थिप के पाठव ह हे प्रस्तुर गयत न हि प्रोज्व ध्राप्त वेश ते स्वात सुना स्वति श्वर्थाणे वक्ष हे द्वाप हे से विश्वये का स्विध्य स्वित् वनिह तहा है वह ने विद्या या का को यह सिहियर हिस्सी

तीलयातस्यस्याक्षेत्रविष्ठात्रियात्रियं स्वार्धित्रियात्रियं स्वार्धित्रियात्रियं स्वार्धित्रियं स्वार्धित्रियं स्वार्धित्र स्वार्धित स्वार्य स्वार्धित स्वार्य स्वार्धित स्वार्धित स्वार्धित स

त्रिवंववंद्रत्याम्त्रेद्विगलद्रिप्वत्रत्वंद्रन्त्रम् वर्षेवंद्रविग्वत्रत्वेद्रव्याच्यास्त्रे वर्षे वर्

देसड्हा यावला द्व त्व विरापक शिष्ठ को स्कलाम्याल विस्पार प्रमुद्द हिए पंजर र वक्ता करवा या उक्ष ति त्य करा विश्व के प्रमुद्ध पंजर र वक्ता करवा या उक्ष विश्व के प्रमुद्ध है विश्व का र शिक्ष विश्व के प्रमुद्ध है विश्व का र शिक्ष कि देश है विश्व के प्रमुद्ध है विश

र्शनासंध्यायनात्रमुखोबालाकायिनलावनात्मरथन लेखायनात्रमान्यनाद्विराथपीवरगलन्नम्प्र नियंत्रहित्रारम्पान्यम्प्राण्डिमिक्षमितिनान्नत्य बाणितग्रिशितिनम्प्राणिडिमिक्षमितिनान्नत्व बाणितग्रिशितिनम्दिमस्पुर्ते वेष्कुतिष्टाणिति। ज नाजनवता हरेरमरवेषि वीरोन्सिकणकरज्ञेष्ठ रक्षवज्ञेष्ठानमानिल्धिकात्रां प्राणितिलाप्य वयंद्शक्योध्वक्षित्रमानिल्धिकात्रां प्राणितिलाप्य वयंद्शक्योध्वक्षित्रमञ्ज्ञेष्या दिवाताच्या प्रात्वो वयंद्शक्योध्वक्षित्रमञ्ज्ञेष्या दिवाताच्या प्रात्वो वरंदनरवाष्ट्रीक्रमञ्ज्ञस्य सितस्त्रत्यि ह्रम्बद्धारवी। वरंत्रत्रस्व स्वरूक्षम् वर्षास्त्रव्य सितस्त्रत्यि ह्रम्बद्धारवी।

U

गन्नस्त्रित्स्हिगितस्य समिय तिस्त मस्तिग मस्ति। तारहिरस्तु नत्वस्त्र से १० विद्या द्यक्त गलकेलस्त रामा रामा हिए। विस्यू के जल से संग्रा कि तिक्त क कमा तगर्पा हिया से रता स्तरवर्ण वग्य ने गन्स्व हिए। दिष्ठ तस्त्र भाष्ट्र के अस्पि तस्यु लिगस्यु टेविकट मुखा इत्र तक्त रहे हैं कि हम्प हा हर्ग के म प्रकट्क बुध हुई है जिल्ला है जा दिवस्त्रा त्रिव वृद्ध वन तर ने ये। कृत्र गत्र ने उन्ना भेरता है जो सुक्तु तिम्त तलि

न्वातिश्वकार्द्रस्तित्वनविजयस्ते नहेरो दिहेर श्रेयमे विक्रमस्त्रिवितर त्रविद्ध द्विष्ठो। पाल हेर श्रेशह्म त्रस्त्र क्षेत्र णंकितो कण विसी रितो रस्त्र लो ना ति विष हे लि विलोधी बत्य के प्रवाद्य क्षेत्र त्र शिला त्र त्र प्रवाद है र त् विक्ष कि प्रवाद्य क्षेत्र के स्वाद्य के हैर त् विक्ष कि प्रवाद्य के हिए स्वाद के स्व

 ध्यमनत्त्वद्वर्गावंशेविक्जनान्द्वर्गनममञ्जते तत्त्वप्तापीरंग्नतंत्वे पिवत्वित्राएण्क्रततित्त्वर्ग्यः यश्मस्पत्रस्व विविद्याद्याद्वस्त्रस्त्वः विक्षास्त्रवे त्रावित्रणिरेण्यकानान्त्र द्विष्ठमकार्यकं किमितिवर्ष्याः णावरामत्रपावित्राणात्रतिम्हिरमणिराणित्रिष्ठाणि हेशस्त्रोवासीनासम्यायस्त्रेष्ठिमहिष्ठणात्रातिनावा हेत्राधीक्रताबलाययमहि द्वित्रस्यः प्रयुक्तत्रास्त्रम्य पर्पत्रमावश्वत्वव्यक्षप्रतिसम्बद्धाः स्तरम्य प्रविव्यक्षिणात्रातिनावा सर्पत्रमावश्वत्वव्यक्षप्रतिसम्बद्धाः स्तरम्

रम्तासंहतारामानामम्तिश्वरातृपमहोतास्त्र वाराय्धायनाद्राष्ठद्तादितातस्थिरसंतिकारीहर विज्ञानकथ्यमसम्प्रवसन्ग्रेदितिकारीहरता वाराय्धायनाद्रम्यम् ॥ स्थ्रश्रीरामवर्गन्॥ ॥ स्याणानातिस्थनकातिमसम्यनपावना नाषाध्ययनमुक्तात्मपदिपरपद्पात्रथयस्त्रित्त स्याविश्रामस्यानमेककविवरवन्त्राजीवनम्बन्ना नाबीकंधम्बित्रमस्यप्तत्वत्तत्त्वतात्त्त्थरामनाम् ॥१। उत्स्रद्धामनकात्त्रात्त्वत्रामायरामाम नित्वामावप्रधानित्वामित्युण्यासायरामासने विभगम् दस्नित्रमानसम्मरहस्मायसमारविध्या यम्बरहोत्तरो रखुङ जो इसायपुर्वेतमा श्रीरेफ्य क्रम्राजनात्त्वचाका अध्याद्या स्मायसमार्थिया कार्यक्रिस्तित्ववर्धा हरस्यादिमायासम्बर्धित्ववर्धा हरस्यादिमायासम्बर्धित्ववर्धा हरस्यादिमायासम्बर्धित्ववर्धा हर्षे सार्थात्मा ख्राप्याद्या स्मायस्मार्थित्व वर्षा ख्राप्याद्य सार्था हर्षे ज्ञानात्याद्य स्मायस्म स्मायस्म

23

कन्यसमा द्वावलंबा हु श्रिश्यात्मी रतयोवना निश्न के हे बां शुणाना गणा श्रिश्यमक्त ति निमक्त ये तिच्यात् तेष्ठस्त्र रवा के ति रत्तरं तिवान राज्य निम्मतार् यतेष्ठस्त्र विश्व श्रिश्यणा नेवान्याण गुणाश्रीमराश्येष्ठ स्त्रापमाहमा सायसम्बद्धाः त्रापक श्रेप्यतिष्ठिनो हिम्मिग्रियावामस्य प्रणाने त्रापक श्रेप्यतिष्ठिनो हिम्मिग्रियावामस्य प्रणाने स्राप्त निध्न ध्यग्व दिखेना ग्रेगो ध्यम्बक्त प्राप्त स्व हर् हरिवंद नद्य ति वहर्ते हे स्व ता हिनस्त्र स्यामत्र स्व ह करकल्या ने के यणा केवन। जाबी क्रिक्त माणिवेक

रक्षं

न्यासिक्श्वित्वस्याध्यास्य स्थानित्वस्य स्यानित्वस्य स्थानित्वस्य स्य

क्षिश्वानिविद्वितिर्जाङ्स्य व्यक्तिस्त्रां विद्वानिद्वितिर्माण्यां विद्यानिद्वितिर्माण्यां विद्यानिद्वितिर्माण्यां विद्यानिद्वितिर्माण्यां विद्यानिद्वितिर्माण्यां विद्यानिद्वितिर्माण्यां विद्यानिद्वित्ति विद्यानिद्विति विद्यानि विद्यानिद्विति विद्यानि विद्यानिद्विति विद्यानि विद्यानि

24

वितत्रणीव्यं श्रायाजंतितवान्यवनविज्ञतारेवासुर यामणीज्यविद्धं निशावर्णतितंकातियोज्ञत्ने॥ तर्गणं उद्यानला नृगणं तितितित्यतं वव्यामालयं जयसंपर्विद्धितातः र्ने यस्रीर्णादेवाधिपावा ज्ञगण्यावातराधिपावायरिहर्यक्ष्मे । स्वाधिपावा ज्ञगण्यावातराधिपावायरिहर्यक्ष्मे । संदर्शनं ते एणकी वितत्ते से वंजितित्र हिंदिर्ध्या । संदर्शनं ते एणकी वितत्ते से वंजितित्र हिंदिर्ध्या । संदर्शनं ते वंजित्र विद्धं या वित्र विद्धं या विद्या या विद

दिमानिर्यवणकारणं १९ धत्रनायकराम्तावक्यशाराम् राशाकमस्वादेश प्रणातहर प्रणिपतावाएपा वृषेत्र स्व। अन्य प्रावतहेब रेतरहितत्व प्राजने तत्म रेवे तक्षेठ वतरी कृणे तर्वकेतत्व श्वितं तत्प श्रेष्ठ प्रोजिक्सम्माव मंता विद्वापति सुतश्च कवरी किपाना कर्ता संस्थान माधे के विश्व चवहि शिके का श्विते खाली हेम खु भनी जुजपरिव वला जा समाणस्व यासी वाली हेम खु माली गुण निधि रिष्ठण निर्मिती हा कुण स्याशिष्ठ का तथे वमधि खितस परिते है तक लेते हे बोर खिस्ट हु खाते वि

धर्मगवताक्रमभ्रते निवतायेषांताह यि किते विवतायाम्य मार्या मुग पाक्र है वा हुन पेयुषां हिवपहां जाते विश्वास्त है वा हुन पेयुषां हिवपहां जाते विश्वास है कि कि मारो वित्रेथा कर्ण तम्म रूपता यितं न विद्यतं नो के पित ने पुण गाय्य का मुख्य में कि हिव्यतं का मार्य मित्या करें ति हथितं का मार्य मित्या स्वास है कि विवयतं करें कि स्वास के पित के प्राप्त के प्

रधेत्रबिद्धित्रक्रालबंडमर्मोलीलायभ्नंश्रिया संग्रामामृतमागर जमश्चनक्री हा विधे में द्रोराज्य राजतिबेदिराजविनतावेधव्यह्से तुज्ञां रुखे हो नाक राजतिबेदिराजविनतावेधव्यह्से तुज्ञां रुखे हो नाक राजदेशित्रबुरली रेबलो प्रवास्थित है विशेष स्वन्महाबल इतिरवाति गतोमाफ तथ्ववास्य रामुक्तः महम्म पिता रागलीवली पानिहाथित्रकाम बक्षेत्रमें रिपक्षेश्री रामवैद्द स्विरा रिह्मियो हाथी श्ववधीत्रान्सपिर पलन्तक्रामे परायेपरायेथेना वनश्चितान्सपिर पलन्तक्रामे परायेपरायेथेना वनश्चितान्सपिर पलन्तक्रामे परायेपरायेथेना कालंकारहर्राक्कितिकक्षतियाकांतयामीतयामीह् नाइनेश्वरष्ट्रस्वित्तरवं त्वत्रम्मतार्यस्तायान्त्र शरमोराक्षरिक्षद्वाम्पनिधनाधस्तास्तराप्तवारि णीच्छण्मुरारिसंइतिमुरक्कावास्त्वणाश्चिमां र यापात्रकगत्मस्यव् रितास्क्रित्येष्ठकानाश्चर्य क्रवाविकपूर्णनेक्यक्षत्रेत्रस्वायापायाया ज्येयन प्रयात्वयस्त्रम्यक्रेस्र रोताक्रयापायय परिष्ट्यकान्त्रक्षवर्रतीमं वनं प्रस्किता खादीनीत् यक्षाप्रवापविष्ययोक्षात्रात्विक्रयापायाक्ष्य

रा

मित्तीष्णायजनिहारामानिधानाहिरिश्र्णिहिद्याद्यक् तक्ष्मरबाधतमसहत्याधिनाथ्यागनावद्यात्राज्ञविनि त्र प्रत्येना विहेहबद्धान्ति। द्वाहात्रार्ग्धान्ति। तथ्येराधाग्यरसावध्र वध्याधरस्य प्रथष्टिपरमास् जनमारापितः। इत्र विश्वक्षेत्रान्तीर निमिमकरक्षी व्यानक्षम्भादिकी वायास्य तरामना शंज तथिसहरू हाश्वेनानाव की विश्वति यो यं चवस्पश्र ए। विम तर् मतसागरीकी विश्वित्र वा तुंशं ने वा त्र या तिष्ठ नव तिचत् या त्र षणं सन्यमागिश्रा त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र विभावति वि स्पद्मनव्काहिद्मागतायास्पब्रह्मम्याद्यस्यास्य स्पर्मनव्काहिद्मागतायास्पब्रह्मम्याद्यस्यास्य व्यात्रातव्यास्त्रहेनागतायास्पब्रह्मम्याद्यस्य स्वात्रवाद्यास्त्रहेनात्रवाह्यस्व विव्हान् व्यात्राह्म हेन्द्रहेनात्रवाह्य हेन्द्रहेन्द्रहेनात्रवाह्य हेन्द्रहेनात्रवाह्य हेन्द्रहेनात्रवाह्य हेन्द्रहेनात्रवाह्य हेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्य हेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्रहेन्द्य

562

पतित्रासन्द्रपणनवकी विद्विश्विष्ट्रांनी विव्युक्ष तथ्रवतिस्था कुष्ट्रेस्थां हो कुष्ट्रेम हे दिस्ता स्व सम्मन्य क्षित्र स्व सम्मन्य तस्मारता । ३। रेव इक्ष्य किर्मित्र प्राप्ति विद्या स्व वंतिषयोगयास्तितितारात्मव्यतिहमकरम्ब्रयशापा रपस्प।पिद्देवच्युज्ञदंडदर्थगरिमाजीएष्ट्रतापानित्व जालापित्रमकी हिपान्दढरी विस्मेरिताबिद्वश्राष दि कतितारकात्कतिकतित्ती रोद्धित्कत्पप्रिपालया वलगण्य तिकरकात्कप्रत्केदंदवाद्दीम्पष्टम्बस्त रिनीललाटतिलकातारा स्कित्र्षावली नत्त्वेशक पालिनी हिमगिरिदंडंकरे बिन्नती कर्वाणाञ्चणहप्टन प्रमखिलंराजे प्रजालिका । बेलाक्यान्नरलास्ति हिमखिलंराजे प्रजालिका । बेलाक्यान्नरलास्ति विज्ञति ।

ममुहितायिषिम्बम् पानवत्वि विश्वीरयुवंशरम्बम्बा रागिविश्वोदेशस्मापारे नृपमं हिर रिष्ठ्र पुरं माकरेनि रिर्मातारे गिरिशेषरे विष्ठथरागा रेतेष्ट्र वावरेण्यि दिश्वीरयुवंशहीय नवता इती सरारे प्रियायस्मान् स्मम् महाहिति रिज्ञा नृदर्यनारी श्वरा व्यसान् व्यस् समस्म राहिति रिज्ञा नृदर्यनारी श्वरा व्यसान् व्यसा समस्म रितिश्व स्वरं स्थारकं हो मह मंतिश्वस्य नक्र स्पर्शित्र यां कित्र शिश्वीराम ब्रह्मक विक्रवि त्र प्राह्मक विश्व सित्र सित्र का हा हव स्त स्वरं निकर् वेतो का वा का वियत । अश्वी ज्ञान कि ए निक्तर हत्व

विश्वीरहीरसमुद्रगाधलहरीलावसपलक्त्रीसुष स्ववी वेसुलनाकलकमिलनाथनेक्यंवद्रमणस्या रेववहरातिसाधित्रखन्द्रभास्त्राचा सुग्राखांगियत्रस्य तित्पते विश्वनित्सर्याक शाया सुग्राखांगियत्रस्य तारगणपालि गाण्यवाषीय तिस्त्रीपतिस्त्रीक्रिंगियतिक्रिंगि विष्यतिकलं नी लोत्यलानां वनक द्रिश्चीयतिक जलिप कडललीलामरालीय तिस्त्र क्रिंगीयतिक तिनामणि घटा चक्की विसंघ हत्राक्षीकी विस्त्रीरखन्त्रा स्वतान्त्र तीपाएणेत्रतापानलंसजानोनिधमंहलान्यधगर्ताच्याक्ष्मं व्यवपत्री व्यवप

कम तिताह्यासुतेकी विष्ण धमहाराजश्री मन्जगति यश्माते धवति ते प्रयापारा वार परमप्रकृषण्यम् गयते। कपर्विक्र लाग्ना वित्वनपति संक्षित्वरं कप्रवास क्षित्व वित्व वित्व

करवनीतिबम्प्रत्याके जाशंतिहमावलंतिवक मक्हितकहितवहीरो हितहलायुधितिवलुधारार तिरारतिवीरणानालेमकुम्लंफणिपतिनिम्हतकी त्रिवलेम्ब्रेणाम्हणकेताराक्षेत्रां जारामिहमहाम उपः पंहु हेउशहंती प्रस्कृतहताहलन्तिरवलाङ्ग्रा राज्यणिसारम्बराह्यणाणिवंप्रत्यतिरवलाङ्ग्रा राज्यणिसारम्बराह्यणाणिवंप्रत्यतिरवलाङ्ग्रा मराजेप्रसन्धे रिष्ट्रमा निर्नेयम् खना सि विप्रवाहो वागिरामु स्वेतावहित्तवी हितानुविषरो निमृशा हम्त्रोहप्रविच्यार्थस्य एथनस्य स्व

त्रांकी तित्वस्मलमेक मेंबर पित्राक्र रतस्याजितारे शरेवब्रह्मार सारेमहिमिवक सित्यायना ही निना है त्रेत्र प्रांतिहेत्र स्वित्वन्य बल् । नाटक नाट्य्या श्वेत्र श्वेम् त्रेयाण्मी कमहकमहिन कातक स्वक्र सार्वी राज्य क्षामणि विव्यामार नारका रोष्ठ प्रवास्य स्व अध्येत्री रामस्य प्रताप वास्ति॥ ॥ एक। अस्य तिमुक्टर नवत्यसा प्रांप्य स्वित्वित्वित्र स्वत्वे स्व तिम्य तिम्य प्रांप्य बलत्य राज्य स्व तिस्य नटके स्व तिम्य तिम्य हो स्व विराव तिस्य नटके स्व तिम्य तिम्य हो स्व विराव तिस्य नटके स्व तिम्य तिम्य हो स्व विराव तिस्य नटके

मनिहां ग्रंचणवक्रपंकिमितिश्वेककमाद्रियतीध माणक्रमेणवया हित्तुगणतिरमो नाजने त्रथा बीत्रवाश्रासमु प्राव्हनक्रिमिर्यं हे हिवति प्रतिमान् के विश्वेष्ठा के हे ग्रंगन्म हितिमाक् कर्वं ह्यमान् विश्वेष्ठा के हे ग्रंगन्म हितिमाक् कर्वं ह्यमान् विश्वेष्ठा के प्रत्याक्ष्य तिरस्य प्रविद्या प्रविद्या हित्र प्रत्या है विश्वेष्ठा है स्वार्थित है ति है है त्या हित्र प्रतिस्व है ति है है ति है कि एक निता सुप्रत्य ता पान हो येना स्वित्य के सित्य के ने एक निता सुप्रत्य ता पान हो येना स्वित्य विद्या वनक हो सिक्य प्रति संवर्धते। है वित्य ग्रंगि वर्ध विद्या वनक हो सिक्य प्रति संवर्धते। है वित्य ग्रंगि स्वर्थ विद्या वनक हो सिक्य प्रति संवर्धते। है वित्य ग्रंगि स्वर्थ विद्या वनक हो सिक्य प्रति संवर्धते। है वित्य ग्रांगि स्वर्थ विद्या वनक हो सिक्य प्रति संवर्धते। है वित्य ग्रंगि स्वर्थ विद्या वनक हो सिक्य प्रति संवर्धते। है वित्य ग्रंगि

मीतायतिविए ते यस्पार तिरुपा रूपा एज व्यास् प्राव्धरागोरवा रूपा रूपा रूपा रूपा एज व्यास् प्रविश्व स्वाधित्र प्रमुखावा रंगवेन्य न्य सेत्र मा प्रतिक्त व एनि विक्षे युपा कवी ना गिर्ध राम्य स्तिक्त प्रवृत्व एनि विक्षे युपा कवी ना गिर्ध राम्य स्ति प्रयुक्त पर हन्जा जा वजी सो वितास सर्वेव रिथयस्त्र वा रिवित्त तो ने बां खुति प्रदित्ता रेगे रेवच रूप प्रवाप तपन वासा हिन् यं बका ना रेगा विज्ञ हाति निस्मर क्षित्व संस्थित स्त्र स्वास्मा विज्ञ हाति निस्मर क्षित्व स्वास्मा विव्या तास्म ता सरमा तरा ज वसा ति है वस्त्र यं नूर नूत पाता लावधिपंकमप्रवयुष्तिष्टेतिहम्मीद्यारिशम्यायेरिष् वे निपत्पत्तवनो निम्हुस्थाना जलेतका ता क्राण्य परेण नवता व्याह्मण्य हन्मे उला त्रिश्री महाम् निवेशि ता गुरु विपद्यके त्रमा त्यामतो बाष्णो त्यूर मिषाञ्य जलका श्रीत्रात्तर स्त्रुपय्य विश्वात्त्रमी प्रतं गास्स्रु टकर हिन्द्रशासेक लिगा क्रिर्गाः स्त्रहिना स्याह्मे गास्त्रियवल ति र एक्षे ए मगा निर्गार्था स्थाने स्वाह्मे स्थाने स्थाने

२६

श्रदेविहिप्रज्ञयोद्यतेष्रिपतकावोजवाह्यवलीविषा द्येष्ठविहिप्रज्ञयोद्यतेष्ठित्यक्तं वित्यक्तं वित्रक्तं वित्रक्तं वित्रक्षं वि

देतममानुद्धानायवमरी शाई तशामवानि रहाया हरियातको लशान सङ्ख्य तिह्वाह्य ११९ गरे पारियमात्र स्तिममान् प्रसावली बाष्ण्यात्र कीरा पंतरसात्मनो विरह्मा कं डो प्रावकत्यसा माञ्चामन् सम्बर्धि प्रसाव विद्या स्वावना स्वता कार्ड परिवेपता ति वित्र व्यक्षी माधने वो धने १९। माधम्प्रीण कथ्य एण उथ्यम् नो वेणी त्रपाणी वत्र अ महामवसूवरे एपकवयावाक् ब्रह्मिया तिनीन स्रशाहित नानकाल व्यविव्यक्त्र रानधारा तहां तहा याजनितानवाक्रवकानामान्यनगांकवित्र । स्वावित्र । स्वावि

२७

तिवज्ञतिहीरां बुधिमाधवर्ग नयेन्त्रगृधनीह्याता श्रमात्पत्तिविज्ञतिविज्ञानिकेकमेडेल जलेरात्मानमामिविति। स्थाकातासमहेवपत्पास्पु दमिवगित्तान्यतरा लेसु प्रधान्युडीयाहीयन्य स्माश्रिवरशिषामेवतासी न्याश्रयते। इक्रव्येति नारी गिरिष्ठर खुपते जलु सुबीक रवास्पास्पु त्यानर्श्वित्ता वस्थयात् छुरतिश्वित्त प्रधाराना भूषस्त्र होत्ता वस्थयात् छुरतिश्वाष्टित प्रधाराना भूषस्त्र होत्ता वस्थयात् छुरतिश्वाष्टित प्रधाराना भूषस्त्र होत्ता वस्थयात् छुरतिश्वाष्ट्र होत्ता वस्य स्थानिक छुने। स्रमाहित्र सम्मानन हसुसेहे स्पारण क्रम्बत्। खंबांबास्त्रलमत्यत्रहितवान्हण्यरेषांवतंहवर्षः कमिहत्तस्यवत्यस्त्रोजनप्रद्यात्य। शहाहवत्र जजवाजिपत्तिपटलप्राप्तत्वधलान्देश्ववाद्यत्त्रस्य यत्रस्य वर्षामायत्वित्रश्राप्तत्रश्राक्षांवर्षत्वद्धः। वितार्णिल्हतानाध्यस्त्रक्षां यत्रक्रमित्रोणिप तीयते किमपरंशा बीयते वास्तराम्या खाले स्वाप्त्रे स्वाप्ते देशे स्वाप्ते स्वाप्ते देशे स्वाप्ते देशे स्वाप्ते देशे स्वाप्ते देशे स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वापते स्वापते स्वाप्ते स्वापते स्वापते स्वापते स्वापति स्व

न्त

राजन्यं जाप्रवानामुज्य तिरावरा नेवहा नहीं तिर्व काम त्या स्त काम काण लिय का क्षेत्र महन विम्छली जाहे कि रावल वितकरा स्वजो दिना व्याप्त स्वाप्त का निमान वाक्रिय दिता जम तियु न र प्यु द्यक्षि वाहु प्रविश्व प्राप्त ता जाह विमे ध्वां तस लिले संस्ट ह विकि र व्याजे ना त्रक शास्त्र एए स्माले ले हिंदा निवाय के ली ना शास्त्र विविद्या परिषत् कुरा स्वाप्त के लिले का स्वाप्त के लिले के लिले का स्वाप्त के लिले के लि तस्मन्विजनवन्तरंत्तरहन्नावकाशस्यविष्टा
मीतितविष्ठमाधिपतियिविष्ठमाधितित्वविष्ठमाधिपतियिविष्ठमाधितित्वविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधित्विष्ठमाधितिविष्ठमाधित्विष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधित्वविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्ठमाधितिविष्यतिविष्ठमाधितिविष्ठमाष्रमाधितिविष्ठमाष्रमाष्ठमाष्रमाष्ठमाष्ठमाष्व

मगर्जिनलाकिथनल्यामरान्त्राकितानान्द्र मणाउवाभारवातान्त्र वार्याद्वानान्त्र वार्याद्वान्य वार्याद्वान्व वार्याद्वान्य वार्याद्वान्य वार्याद्वान्य वार्याद्वान्य वार्याच्वान्य वार्याच्वाच्वाच्वाच्याच्वाच्वाच्याव्वाच्याच्वाच्वाच्वाच्वाच

ह्शिश्रयाद्याद्धिणानीतत्यत्रियातकात्वियातिस्प हत्रामद्दे हत्पानाविद्वोद्धसांवित्रविद्धे।उप्तद्दाना क्वाम्यापीदितपत्रगाद्यवलयेखात्रश्यापादेव भणम्हानामदाति रिणन्यवल्प्द्रीणास्मरास्ति भणम्हानामदाति रिणन्यवल्प्द्रीणास्मरास्ति मान्गाणानास्त्रतना प्रमतितित्तु ठाद्यास्त्रस्त्रणित्र मान्गाणानास्त्रतना प्रमतितित्तु ठाद्यास्त्रस्त्रणित्र मान्गाणानास्त्रतना प्रमतितित्तु ठाद्यास्त्रस्त्रणित्र मान्गालानास्त्रतितित्ति हितार्गे प्रविश्वाद्विम् हास्त्री नाकुलद्वतितितितित्ति हितार्गे प्रविश्वाद्विम् हास्त्री नाकुलद्वति श्वाद्विक्षित्रास्त्रवे प्रध्यवापेश्यानाति इत्रालम्बर्णाद्विश्वाद्वाद्विक्षित्रान्त्र ताविश्वकायोऽत्र गावस्त्रमान्यात्मा दिविक्षतिवान्त्र ताविश्वकायोऽत्र मेंग्लुफ्रांक्सेनकालो तथविकत हुआयोगितिध्येयम् तिर्देशवंगावतारेद्दिर्मग्गाणाऽत हुल्तस्य नुयुष्मान् श्राद्धश्रीलस्यवृद्धात्मा ।। ।। अथबुष्यायनम्॥।। १०० ।। ।। अष्ट्वकृत्रम्नावतापर्गतंहत्य ग्रमध्यिक्ष तसंपर्गन्। श्रावस्यवद्या हात्सानमेवात्सन्।। युष्माक्मथुस्र ह्नोमथुवयुद्दिश्सर्यान्धु स्यिष्ठि । युष्माक्मथुस्र ह्नोमथुवयुद्दिश्सर्यान्धु स्यिष्ठि । युष्माक्मथुस्र ह्नोमथुवयुद्दिश्सर्यान्धु स्यिष्ठि । युष्माक्मथुस्र ह्नोस्युवयुद्दिश्चित्राल्यान्धु स्यिष्ठि । युष्माक्मथान्त्रत्तर्तिविद्धिक्तिगालिताश्वस्य । युष्माक्मयोन्द्रत्तर्तिविद्धिक्तिगालिताश्वस्य प्रमामन्योनयनस्य सिद्धिताविष्ठस्यरियवातोषि

उप्रतिविश्व विमाण्य पर्म ज्यो ति ग्वान् ही ने सी रवा तो ये तिम्य स्मिर् इति त्वा ता ता ने वो ये व्या ते रक्ष स्मार सिन्द विना वि ए त्र प्रति र ए ए व यो शिर् तो रक्ष स्थान्य में तिन्द विना वि ए त्र प्रति र ए ए व यो शिर् को वक्ष वर्ग ए विद्या ल के हा दे र आ ए ए यो माया जी जिल्ले विश्व विश्व को सिन्द को सिन्द को सिन्द को सिन्द को सिन्द को सिन्द के सिन्द मकलावधेम्यश्चोवित्रित्वात्वयः सवक्षकानिक की हिन्धिराम्यारम् श्वेचश्च त्रं स्मिरिसम्स्मा रेकात्मछो वित्रं कुतकराण्यञ्चल रत्ने द्वारम्यार्म्य सरक्षेत्रे । ह्वाञ्च छाश्चमवित्र ए तुवितिम्धा र्वनात्वेश ल्यायणया घत्य स्वात्राम्य राष्ट्र री प्रत्वत्य श्वेष्ट्र स्वात्वा हर्षे । राष्ट्र स्वात्वा स्वार्थ राष्ट्र री प्रत्वत्य श्वेष्ट्र ए यो र्यात्वा वित्रकाल इव दिषा र त्वत्य तो रेस्स्रे राणकिल क्षिक्ष क्षेत्र का क्रित्र का वियुग्या तेमस्य स्थाने। र वो व्यवस्थ ना त्रास्त

वरनुडिरिस्नायतांकलप्रधाक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्यां स्वीहरूमिक्ष्रित्रमानिक्षां स्वीहरूमिक्ष्यां स्वीहरूमिक्ष्यां स्वीहरूमिक्ष्यां स्वीहरूमिक्ष्यां स्वीहरूमिक्ष्यां स्वाह्यां स्वीहरूमिक्ष्यां स्वाह्यां स्वाह्य

अनिर्मानम्बादात्। नताहिक्नकियकरकिष्ठल बातकोरीरके तिर्विश्वनी गाहिता कि प्रवग्वन्वण शंकर बाकरोडी परिवर्धिक गिर्मित्र विषत्नवमे मीय्यामाय्यायकाले काले मयनसुति इतिवृश् रालोकपाली कपाली वक्रवके रिष्ठाण बलविति नहु तेनी रगा रेरगारे रद्या हु शाचलायां स्प परिकृषिद्ध बिन्निर्मित्री तीर्मी विश्वास्त्र श्री विश्व वि

म्हेरिविद्निविनवेनवेनवेगवमाने।हिंदिनेरता व्यत्रिख्यस्य प्रगतिविद्वत्वकान्ष्टिनवेष्टा प्रविष्टा विद्वत्वकान्ष्टिनवेष्टा प्रविष्टा विद्वत्वकान्ष्टिनवेष्टा प्रविष्टा विद्वत्वकान्ष्टिनवेष्टा प्रविष्टा विद्वत्वकान् स्ति विद्वत्वकान् स्ति प्रविष्टि विद्वते का स्ति विद्वते विद

मतवन्तवतात्त्वो त्त्वे त्त्र्त्याणि हेवा ख्रिमी मन्या महमास विकरी मंत्रित्वा ख्रिते पार्टि खाल्या यस हे ब्रिने उक्त वित्र पावमा निष्ठा त्या है। निक्ता ज्ञाति प्रवित्त मुतिहितम नम्या वन पावनी ख्रीस्त्रो ज्ञाति प्रवित्ति प्रक्रितिमह्द ख्रिके कमुर्या त्र सम्पृत्र शिक्त विविद्या का ज्ञावाणी ज्ञतह त्मक्ते ज्ञासमा निम्बत्य १०वर्ष ज्ञाला विविद्य श्रिके दिखिता। । श्रिनं स्वे अ ११ वर्ष ज्ञाला । श्रिने । । श्री। । । श्री। ।

